मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत की मुख़पत्रिका

मासिक

अन्सारुल्लाह

क़ादियान

फेब्रुवारी 2025 तबलीग़ 1404 हि.श.	प्रबंधक अताउल मुजीब लोन	संस्करण–22 **अंक** -10

सम्पादक : सय्यद रसूल नियाज | एजाज़ी सम्पादक : एच्.शम्सुद्दीन

स.सम्पादक(हिन्दी) : वसीम अहमद अज़ीम

सपांदन मडंल
सय्यद कलीम अहमद अजबशेर
मोहम्मद इब्राहीम सरवर

मनैजेर
ताहिर अहमद बेग
99152 23313

प्रेस
फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस
क़ादियान

वार्षिक मूल्य :₹ 250
विदेश: $ 50

प्रकाशन स्थान
ऐवाने अन्सार, भारत
क़ादियान 143516
जिला : गुरदासपुर, पंजाब

फोन : 7837985190

Email:
ansarullah@qadian.in

WEB LINK
https://www.ansarullah
bharat.in/Publications/

विषय सुचि	पृष्ठ
यौमे मुस्लेह मौऊद	2
अन्सारुल्लाह से हज़रत मुसलेह मौऊदरजि. कि अपेक्षाएं	2
हिक्मत से तब्लीग़ करो!	3
मसीह मौऊद शादी करेगा और उसके यहाँ संतान पैदा होगी	5
दिव्य रूप से उसके जन्म की सूचना दी गई	7
मुस्लेह मौउद की भविष्यवाणी, रसूलुल्लाहﷺ की ही भविष्यवाणी है।	8
यह है एक मुस्लिम नागरिक	9

संपादकीय

अन्सारुल्लाह से हज़रत मुसलेह मौऊद [रजि.] कि अपेक्षाएं

"अंसार" शब्द हज़रत मुस्लेह मौऊदरजि. को बेहद पसंद था क्योंकि यह न केवल रसूलुल्लाहसल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथियों की कुर्बानी और त्याग का प्रतीक था, बल्कि आप का इश्क-ए-रसूल(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का भी प्रतिबिंब था।

1911 में, आपने हज़रत खलीफ़तुल मसीह अव्वल(र.अ.) से अनुमति लेकर "अंसार" के नाम से एक संगठन की स्थापना की थी। हज़रत रसूल करीम(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया:"अंसार से सिर्फ़ मोमिन ही मुहब्बत करेगा।"

(सहीह बुख़ारी, किताब मनाक़िबुल अंसार)

1940 में, आपने बाक़ायदा "मज्लिस अंसारुल्लाह" की स्थापना की और अपनी दिली ख्वाहिश को इन शब्दों में बयान किया:"अंसारुल्लाह की मज्लिस अब क़ायम की गई है उनसे ...वही काम लिया जाएगा जो रसूल करीम(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के सहाबा (रज़ियल्लाहु अन्हुम) से लिया गया था।" (ख़ुत्बा जुमा, 26 जुलाई 1940)

इसके अलावा, आपने फ़रमाया: "याद रखोतुम्हारा नाम ! अंसारुल्लाह है यानी अल्लाह के मददगार। गोया तुम्हें अल्लाह के नाम से जोड़ा गया है और अल्लाह तआला हमेशा से है और हमेशा रहेगा । इसलिए तुम्हें भी कोशिश करनी चाहिए कि तुम अबदियत का प्रतिबिंब बन जाओ। तुम अपने अंसार होने की पहचान यानी खिलाफ़त को हमेशा क़ायम रखो और कोशिश करो कि यह सिलसिला नस्ल-दर-नस्ल चलता रहे।"(अलफ़ज़ल-, 21 मार्च 1957)

ए मेरी उलफ़त के तालिब ये मेरे दिल का नक़्शा है
अब अपने नफ़स को देख ले तू वो इन बातों में कैसा है।

(कलाम-ए-महमूद)

(एच.शमसद्दीन)

यौमे मुस्लेह मौऊद

हज़रत खलीफ़तुल मसीह अलखामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं:

...यौम-ए-मुस्लेह मौऊद ... 20 फ़रवरी को जमाअत में मनाया जाता है। यह इस वजह से नहीं कि इस दिन मुस्लेह मौऊद का जन्म हुआ था, बल्कि इसलिए कि 20 फ़रवरी को हज़रत मसीह मौऊद[अ.] ने मुस्लेह मौऊद की जो भविष्यवाणी की थी, यह उसका दिन है और हज़रत मसीह मौऊद[अ.] की सच्चाई का प्रमाण है।"

(ख़ुत्बा जुमा, 15 फ़रवरी 13)

हिकमत से तब्लीग़ करो!

दर्सुल क़ुरआन

हज़रत मुस्लेह मौऊद[रज़ि]

اُدۡعُ اِلٰی سَبِیۡلِ رَبِّکَ بِالۡحِکۡمَۃِ وَالۡمَوۡعِظَۃِ الۡحَسَنَۃِ وَجَادِلۡہُمۡ بِالَّتِیۡ
ہِیَ اَحۡسَنُ ؕ اِنَّ رَبَّکَ ہُوَ اَعۡلَمُ بِمَنۡ ضَلَّ عَنۡ سَبِیۡلِہٖ وَہُوَ اَعۡلَمُ
بِالۡمُہۡتَدِیۡنَ ○ (النحل 126)

"अपने रब के रास्ते की तरफ़ हिकमत और अच्छी नसीहत से बुलाओ और उनसे सबसे अच्छे तरीके से बहस करो। बेशक, तुम्हारा रब उसे भी बेहतर जानता है जो उसकी राह से भटक गया और उसे भी जो हिदायत पर है।" (सूरह अन-नहल: 126)

हिजरी शमसी तारीख़ में, हज़रत मुस्लेह मौउद[रज़ि] ने फ़रवरी का नाम, ऐतिहासिक घटनाओं को ध्यान में रखते हुए, 'तब्लीग़' मुकर्रर फ़रमाया है। इस मौक़े पर, तब्लीग़ के बारे में तफ़सीर-ए-कबीर से एक हिस्सा पेश है। (संपादक)

हज़रत मुस्लेह मौऊद[रज़ि] इस आयत की तफ़सीर में लिखते हैं:"हिकमत के कई मायने हैं - जैसे इल्म, समझदारी, इंसाफ़, नबूवत, और बुर्दबारी। जब लोगों को दावत दो तो हिकमत से दो, यानी पहले नबियों के धार्मिक ग्रंथों से दलील पेश करो, फिर पुख़्ता बातें करो और जो चीज़ें मूर्खता से बचाएं, वही बयान करो।"

इसके अलावा, आपने हिकमत (युक्ति) के अंतर्गत यह भी हिदायत दी:तबलीग़ में युक्तिपूर्ण ढंग अपनाओ: यानी पहले नबियों के ग्रंथों पर नींव रखकर बात करो। अफसोस है कि मुस्लिम व्याख्याकारों ने इस आदेश पर ध्यान नहीं दिया और लोगों से सुनी-सुनाई बातें लेकर बाइबिल के ऐसे संदर्भ अपनी पुस्तकों में लिख दिए, जिनकी वजह से यहूदी और ईसाइयों को आज तक इस्लाम पर हमला करने का अवसर मिलता है। दूसरा यह कहा गया कि ठोस और मज़बूत बातें प्रस्तुत करो, कोई भी बात अधूरी या कमज़ोर न हो। कई बार इंसान सहायक तर्कों को मुख्य तर्कों के रूप में प्रस्तुत कर देता है, जिसका परिणाम यह होता है कि विरोधी इन्हीं को पकड़ कर विरोध करने लगते हैं। इसलिए कहा गया कि पहले हर तर्क को अच्छी तरह से जांच लो, और जो ठोस और मज़बूत हो, केवल उसे ही प्रस्तुत करो।"न्याय" शब्द से एक सीख यह भी मिलती है कि न्याय के अर्थ के अनुसार यह निर्देश दिया गया कि किसी पर ऐसा आरोप न लगाओ जो तुम पर भी लागू हो सकता हो। क्योंकि पहला तो यह न्याय के विरुद्ध है, और दूसरा यह कि विरोधी इस अवसर का लाभ उठाकर बहस में इस बात को उठा देता है, जिससे शर्मिंदगी उठानी पड़ती है।

"हिकमत" का अर्थ धैर्य भी होता है। कहा

गया है कि नरमी और समझदारी के साथ बात किया करो। क्योंकि जो व्यक्ति ऐसा नहीं करता, बल्कि जल्दी गुस्से में आकर उत्तेजित हो जाता है, वह कभी भी दूसरे को सही तरीके से समझा नहीं सकता।

"नबूवत के अर्थ के अनुसार" इसका मतलब होगा कि ख़ुदा की वाणी की सहायता से लोगों को धर्म की ओर बुलाओ। जो तर्क स्वयं क़ुरआन ने दिए हैं, उन्हीं को प्रस्तुत करो। अपनी ओर से मनगढ़ंत बातें न पेश करो। इस क़ुरआन की तलवार(शिक्षाएं)लेकर दुनिया में सत्य के लिए संघर्ष के लिए तैयार हो जाओ।

"مَا يَمْنَعُ مِنَ الْجَهْلِ"के अनुसार इस आयत का अर्थ यह होगा कि तुम ऐसे ढंग से बात करो जिसे दूसरा समझ सके और जिससे उसकी गलतफहमी दूर हो सके। यानी तुम्हारी बात ऐसी होनी चाहिए जो अज्ञानता को समाप्त करे और श्रोता की समझ के अनुरूप हो।इसी तरह हदीस में भी आता है:"اَمَرَنَا رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَآلِهٖ وَسَلَّمَ اَنْ نُكَلِّمَ النَّاسَ عَلٰى قَدْرِ عُقُوْلِهِمْ"

(फिरदौसुल-अख़बार, लिदेलमी, फसल अम्र अमरना)

अर्थात, हमें अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने आदेश दिया कि लोगों से उनकी बुद्धि और समझ के अनुसार बात करें। कुछ लोग जब भाषण देते हैं तो कठिन शब्दों और भारी भरकम शब्दावली का उपयोग करके प्रभाव जमाना चाहते हैं। यह अनपढ़ लोगों पर प्रभाव तो डाल सकता है, लेकिन इसका कोई वास्तविक लाभ नहीं होता।

"مُوَافِقُ الْحَقِّ" का अर्थ होता है कि जो बात सत्य और वास्तविकता के अनुसार हो, उसे ही प्रस्तुत किया जाए। कुछ लोग यह सोचकर कि वे सत्य धर्म की ओर बुला रहे हैं, गलत बातें भी कह देते हैं। अल्लाह ने इस तरीके को गलत बताया है। शत्रु के सामने जो भी बात कहो, वह सत्य होनी चाहिए। कई लोग दूसरों को हिदायत देते-देते खुद गुमराह हो जाते हैं। जैसे कि अल्लाह तआला ने फरमाया: "لَا يَضُرُّكُمْ مَّنْ ضَلَّ اِذَا اهْتَدَيْتُمْ" (अल-माइदा: 106) अर्थात, यदि तुम खुद हिदायत पर हो, तो इस बात की परवाह मत करो कि दूसरा गुमराह हो रहा है।

इसका मतलब यह है कि कोई गलत बात सिर्फ इस उद्देश्य से मत कहो कि इससे दूसरे को सही राह मिलेगी। जब तुम्हारी अपनी हिदायत और दूसरे की हिदायत टकराने लगे, तो पहले अपनी हिदायत की चिंता करो और दूसरे की हिदायत को अल्लाह पर छोड़ दो।

"حکمت" का एक अर्थ यह भी है कि समय और परिस्थिति के अनुसार बात की जाए। इस अर्थ के अनुसार आयत का मतलब होगा कि तबलीग (प्रचार) में सही समय और स्थान को ध्यान में रखना चाहिए। यदि कुछ तर्कों से विरोधी भड़क सकता हो और इस कारण वह तुम्हारी बात न सुने, तो उसे बेवजह उत्तेजित करने का कोई फायदा नहीं।

तुम्हें चाहिए कि उसकी मानसिकता को समझो और ऐसे तर्क दो, जिन्हें वह शांति

(अगला भाग पृ:6 पर)

يَتَزَوَّجُ وَيُوْلَدُ لَهٗ

(मिश्कात - किताबुल फितन, बाब-नुज़ूले ईसा)

नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मसीह मौऊद शादी करेगा और उसके यहाँ संतान पैदा होगी।

हज़रत मुस्लेह मौऊद (रज़ियल्लाहु अन्हु) फरमाते हैं कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने न सिर्फ़ मसीह मौऊद के आने की खबर दी, बल्कि उसके ज़माने में एक ऐसे व्यक्ति के प्रकट होने की भी भविष्यवाणी की, जो इस्लाम का पुनर्स्थापना करेगा और सत्य को लोगों तक पहुंचाएगा। उन्होंने फरमाया कि मसीह मौऊद शादी करेगा और उसके यहाँ संतान पैदा होगी। अब इस कथन का यह अर्थ नहीं हो सकता कि मसीह मौऊद के यहाँ वही सामान्य संतान पैदा होगी, जैसी अन्य लोगों के यहाँ होती है। अगर इसका यही मतलब लिया जाए, तो फिर वही आपत्ति उत्पन्न होगी, जो ग़ैर-अहमदी लोग हज़रत मसीह मौऊ अलैहिस्सलाम की भविष्यवाणी पर करते हैं कि संतान का होना कौन सी बड़ी बात है, दुनिया में हर व्यक्ति के यहाँ संतान जन्म लेती है। हम भी इस बात को स्वीकार करते हैं कि यदि केवल यह बताया जाए कि एक संतान होगी, तो इसे कोई विशेष भविष्यवाणी नहीं माना जा सकता।

इसी प्रकार जब रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह फरमाया कि मसीह मौऊद के यहाँ संतान होगी, तो इसका अर्थ यह नहीं हो सकता कि वह संतान भी सामान्य होगी, क्योंकि यदि ऐसा होता तो रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इसे ख़ास तौर पर बताने की आवश्यकता नहीं थी। लेकिन इस बात को विशेष रूप से बताना यह दर्शाता है कि इस संतान का जन्म कोई सामान्य घटना नहीं होगी, बल्कि यह संतान विशेष गुणों और महानताओं की मालिक होगी। यह संतान उन विशेषताओं और चमत्कारों से विभूषित होगी, जिनकी भविष्यवाणी स्वयं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने पहले ही कर दी थी।

फिर रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आगे फरमाते हैं कि अगर ईमान आसमान के सितारों (सुरैया) तक भी चला जाएगा, तो फ़ारस के कुछ लोग ऐसे होंगे, जो उसे वापस पृथ्वी पर ले आएंगे। यह कथन बुख़ारी की किताबुत्तफसीर में भी उल्लेखित है। इसका अर्थ यह हुआ कि इस भविष्यवाणी का संबंध केवल

मसीह मौऊद लैहिस्सलाम तक ही सीमित नहीं है, बल्कि उनके परिवार के कुछ और विशेष व्यक्तियों से भी है, जिन्हें अल्लाह तआला इस्लाम के उत्थान और पुनर्स्थापना के लिए विशेष रूप से चुनेगा। इसलिए यह सिद्ध होता है कि मुस्लेह मौऊद का प्रकट होना आवश्यक था और उसका ज़माना मसीह मौऊद के समय में ही आना था। यह केवल रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीसों से ही साबित नहीं होता, बल्कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ख़ुदा द्वारा किए गए इल्हामात और उनकी व्याख्याओं से भी यह बात सिद्ध होती है।

(अल-मौउद/अनवारुल उलूम, १७वें भागसे उद्धृत।)

SONET SOLUTIONS
PRIVATE LIMITED
No.41, II Cross, Doctors Layout,
Kasturi Nagar,
BANGALORE - 560043
तालिबे दुआ :
MUSADDIQ AHMAD
Mobile : 098451-98560
Tel : +91 (80) 41636612
Web : www.sonetsolutions.in

"शिक्षा प्राप्त करना हर मुस्लिम पुरुष एवं स्त्री का कर्त्तव्य है"
MUSTAFA BOOK CO
All kinds of Academic Book of Kerala Board, CBSE, ISCS & Universities
Fort Road
KANNUR-1 (KERALA)
Mobile : 09895655426

(प॰4 स) से सुन सके। यदि तुम उसे जानबूझकर भड़काओगे, तो कोई लाभ नहीं होगा। अल्लाह-अल्लाह! कितने संक्षिप्त शब्दों में तबलीग (प्रचार) के सारे रहस्य बता दिए गए हैं! जो भी इन सिद्धांतों का पालन करेगा, वह अपने उद्देश्य में कभी असफल नहीं होगा।

(संदर्भ : तफ्सीर-ए-कबीर, जिल्द 6, पृष्ठ 248-250)

INDIAN AUTO
हर प्रकार की मोटर गाड़ियों के पार्टस सस्ते रेट पर खरीदें।
P. Ali Koya
CALICUT (KERALA)

मलफ़ूज़ात हज़रत मसीह मौउद अलैहिस्सलाम

मुझे दिव्य रूप से उसके जन्म की सूचना दी गई, और मैंने मस्जिद की दीवार पर उसका नाम लिखा हुआ पाया कि "महमूद!"

पाँचवीं भविष्यवाणी में मैंने अपने बेटे महमूद के जन्म के बारे में बताया था कि वह जल्द पैदा होगा और उसका नाम महमूद रखा जाएगा। और इस भविष्यवाणी के प्रचार के लिए हरे रंग के काग़ज़ पर विज्ञापन प्रकाशित किए गए थे, जो अब तक मौजूद हैं और हज़ारों लोगों में वितरित किए गए थे। जैसा कि वह लड़का भविष्यवाणी की अवधि में जन्मा और अब नौवें वर्ष में है।

(सिराज-ए-मुनीर, रूहानी खज़ाइन, खंड 12, पृष्ठ 36)

"हाँ, सब्ज़ इश्तेहार (हरे विज्ञापन) में स्पष्ट रूप से यह कहा गया था कि लड़का जन्मेगा, तो महमूद पैदा हो गया।"

(सिराज-ए-मुनीर, पृष्ठ 36)

"मेरा पहला लड़का जो जीवित है, जिसका नाम महमूद है, वह अभी पैदा नहीं हुआ था, जिसे मुझे दिव्य रूप से उसके जन्म की सूचना दी गई और मैंने मस्जिद की दीवार पर उसका नाम लिखा हुआ पाया कि महमूद। फिर मैंने इस भविष्यवाणी के प्रचार के लिए हरे रंग के पन्नों पर एक विज्ञापन छापा। जिसकी तारीख़ 1 दिसम्बर 1888 है। और यह विज्ञापन 1 दिसम्बर 1888 को हज़ारों लोगों में प्रकाशित किया गया। और अब तक इस में से बहुत से विज्ञापन मेरे पास मौजूद हैं।"

(तिरयाकुल क़ुलूब, रूहानी खज़ाइन, खंड 15, पृष्ठ 214)

"चौंतीसवां संकेत यह है कि मेरा एक लड़का मृत्यु को प्राप्त हो गया था और विरोधियों ने जैसा कि उनकी आदत है, उस लड़के की मृत्यु पर अत्यधिक खुशी व्यक्त की थी, तब ख़ुदा ने मुझे शुभ सूचना दी कि उसके स्थान पर जल्द एक और लड़का जन्मेगा, जिसका नाम महमूद होगा और उसका नाम एक दीवार पर लिखा हुआ मुझे दिखाया गया, फिर मैंने एक हरे रंग के विज्ञापन में हजारों समर्थकों और विरोधियों के बीच इस भविष्यवाणी को प्रकाशित किया और अभी सत्तर (70) दिन पहले लड़के की मृत्यु नहीं हुई थी कि यह लड़का जन्मा और उसका नाम महमूद अहमद रखा गया।"

(हकीकतुल वह्यी, रूहानी खज़ाइन, खंड 22, पृष्ठ 227)

(मल्फ़ूज़ात खंड 4, पृष्ठ 444)

निर्देश हज़रत खलीफ़तुल मसीह अलखामिस
अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़

मुस्लेह मौउद की भविष्यवाणी, रसूलुल्लाहﷺ की ही भविष्यवाणी है।

इसलिए, आप (हज़रत मुस्लेह मौउद[रज़ि]) के काम को देखकर हज़रत मुस्लेह मौउद की भविष्यवाणी की शान और ज़्यादा ज़ाहिर होती है...। असल में ये रसूलुल्लाह ﷺ की भविष्यवाणी है जिससे हमारे आका और आक़ेय हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा ﷺ के बुलंद और हमेशा के लिए रहने वाले दर्जे की शान दिखाई देती है। लेकिन हमें ये भी याद रखना चाहिए कि इस भविष्यवाणी के पूरे होने का ताल्लुक सिर्फ़ एक शख़्स के पैदा होने और काम कर जाने से नहीं है। इस भविष्यवाणी की हक़ीक़त तब और ज़्यादा साफ़ होगी जब हममें भी वो काम आगे बढ़ाने वाले पैदा होंगे जिस काम को लेकर हज़रत मसीह मौउद[अलैहिस्सलाम] आए थे और जिसकी ताईद और नुसरत के लिए अल्लाह ताला ने आपको मुस्लेह मौउद अता फ़रमाया था, जिन्होंने दुनिया में इस्लाम की तब्लीग़ और इस्लाही कामों में अपनी सारी काबिलियतें लगा दीं।

इसलिए आज हमारा भी काम है कि अपने-अपने दायरे में मुस्लेह बनने की कोशिश करें। अपने ज्ञान से, अपने वचन से, अपने कर्म से इस्लाम के खूबसूरत पैग़ाम को हर तरफ़ फैलाएँ। नेकी की तरफ़ भी ध्यान दें, बच्चों की तरफ़ भी ध्यान दें और समाज़ की सुधार की तरफ़ भी ध्यान दें। और इस सुधार और पैग़ाम को दुनिया में कायम करने के लिए पूरी कोशिश करें, जिसका ज़रिया अल्लाह ताला ने रसूलुल्लाहﷺ को बनाया था। अगर हम इस सोच के साथ अपनी ज़िंदगी बिताएँगे तो यौम-ए-मुस्लेह मौउद का हक़ अदा करने वाले होंगे, नहीं तो हमारी सिर्फ़ खोखली बातें ही रह जाएँगी। अल्लाह ताला हमें इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

(जुम्मे का ख़ुतबा, 18 फ़रवरी 2011)

यह है एक मुस्लिम नागरिक!

एक मुस्लिम नागरिक का फ़र्ज़ है कि:

- वो मेहनत करके खाए और आलसी न बने।
- वो भिक्षा न माँगे। रसूल करीम ﷺ इस मामले में ख़ास ध्यान रखते थे और हमेशा लोगों को माँगने से मना करते थे।
- जो शख़्स उसके सामने आए, उसे अस्सलामु अलैकुम कहे...

- अपने मोहल्ले या दूसरे परिचितों में से जो बीमार हों, उनकी इयादत के लिए जाए।

- किसी घर में घुसे तो पहले इजाज़त ले ले। पहले अस्सलामु अलैकुम कहे।

अगर घर में कोई हो और

- जवाब दे कि इस वक़्त नहीं मिल सकता, तो बिना किसी झिझक के वापस चले जाए। अगर कोई न हो तो भी वापस चले जाए।
- कोई शख़्स कोई ऐसी बात कहे जो किसी दूसरे शख़्स के ख़िलाफ़ हो तो उसे दबा दे। उस शख़्स तक न पहुँचाए।
- जो शख़्स फ़ौत हो जाए, उसके जनाज़े की तैयारी में मदद दे। और क़बर तक ले जाए और दफ़नाए...सहाबा के ज़माने में...ग़ैर मज़हब के लोगों तक के जनाज़ों के साथ मुसलमान जाते थे।

- ऐसी बातें जो इज़्ज़त के ख़िलाफ़/दूसरों को तकलीफ़ देने वाली हों, न करे। मिसाल के तौर पर सिर्फ़ एक जूता पहनकर घूमना।
- लोगों के इकट्ठा होने की जगहों में कोई गंदगी न फेंके। और उन्हें गंदा न करे।
- रास्तों और सार्वजनिक जगहों को साफ़ रखने की कोशिश करे।
- नुकसानदेह चीज़ों को न बेचे।
- झगड़ा/लड़ाई न करे। लोगों के आराम में ख़लल न डाले। नुकसान पहुँचाने वाली हरकतें न करे। मिसाल के तौर पर नंगा घूमना, खड़े पानी में पेशाब करना।
- लोगों को अच्छी बातें सिखाए।
- लोगों को इल्म सिखाए। और जो कुछ मालूम है उसे छिपाए नहीं, बल्कि लोगों तक उसका फ़ायदा पहुँचाए।
- बहादुर बने, लेकिन ज़ालिम न हो।

- दूसरों की जान को ख़तरे में न डाले। मिसाल के तौर पर कहीं महामारी हो तो वहाँ के लोग दूसरे शहरों में न जाएँ। (मौजूदा दौर के क्वारंटाइन नाम के कानून, कि कहीं महामारी हो तो वहाँ से बाहर के जहाज़ आदि न जाएँ, इस्लाम ने ही पेश किया है।)
- अपने पड़ोसी को मुसीबत और मुश्किल में देखे और अपने पास माल हो तो बशर्ते अपनी ताक़त के हिसाब से क़र्ज़ दे। मुसीबत से फ़ायदा उठाकर इस हिसाब में न बैठे कि इसके बदले में क्या मिलेगा।
- वो क़ौमी और मुल्क़ी फ़र्ज़ों के लिए क़ुर्बानी देने के लिए तैयार रहे।
- किसी को मरता हुआ देखे तो उसे बचाए।
- अपने भाई के साथ हँसी में भी हथियार का मुँह न करे।
- वो कभी हिम्मत न हारे, मायूस न हो।
- ये एक मुस्लिम शहरी है... मेरी मुरād वो मुस्लिम है जो आज से 1300 साल पहले का था और जिसे अब फिर मसीह मौउद अलैहिस्सलाम दुनिया में लाए हैं।

(माख़ूज़ अज़ अहमदियत यानी हक़ीक़ी इस्लाम, अनवारुल उलूम, जिल्द 8/पृ. 280-285)

13.12.2024 को भद्रक (ओडिशा) में आयोजित तक़रीब बिस्मिल्लाह का एक दृश्य ।

8.1.2025 को आयोजित तरबियती इजलास हैदराबाद (तेलंगाना) के अवसर पर हाज़िर अंसार सदस्य का एक दृश्य ।

19.1.2025 उस्मानाबाद के स्टेडियम में वक़ारे अमल करते हुए जनाब अब्दुल अलीम साहिब नाज़िम अंसारुल्लाह जिला ओस्मानाबाद, महाराष्ट्र ।

19.1.2025 को मस्जिद ताहिर क़ादियान में आयोजित तरबियती इजलास की अध्यक्षता करते हुए जनाब वसीम अहमद अज़ीम साहिब क़ाइद इशाअत मजलिस अंसारुल्लाह भारत ।

27.1.2025 को मस्जिद मसरूर क़ादियान में आयोजित तालीमुल क़ुरान क्लास में तजवीद सिखाते हुए जनाब के मुहम्मद ज़फ़रुल्लाह साहिब ।

26.1.2025 को बोंगईगांव (अस्साम) के सिविल हस्पताल में आयोजिहत खिदमते ख़ल्क़ प्रोग्राम के लिए निकलते समय सामूहिक प्रार्थना करते हुए अंसार सदस्य ।